M.A. Examination, 2018
Semester-II
Hindi
Course : V
(छायावादोत्तर काव्य)

Time : 3 Hours **Full Marks : 40**

Questions are of value as indicated in the margin

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए – 2×8=16

(क) ले मैं खोल देता हूं कपाट सारे
मेरे इस खंडहर की शिरा-शिरा छेड़ दे
आलोक की अनी से अपनी,
गढ़-सारा ढाह कर ढूह भर कर देः
विफल दिनों की तू कलौंस कर मांज जा
मेरी आंखें मांज जा कि तुझे देखूं
देखूं और मन में कृतज्ञता उमड़ आय
पहनूं सिरोपे-से कनक-तार तेरे–
बावरे अहेरी रे!

(ख) कमजोर घुटनों को बार-बार मसल
लड़खड़ाता हुआ मैं
उठता हूं दरवाजा खोलने
चेहरे के रक्तहीन विचित्र शून्य को गहरे
पोछता हूं हाथ से
अंधेरे के ओर-छोर टटोल-टटोलकर
बढ़ता हूं आगे

(ग) मोहमात्र ही नहीं सभी ऐसे विचार बन्धन हैं
जो सिखलाते हैं– मनुष्य को प्रकृति और परमेश्वर दो हैं–
जो भी प्रकृत हुआ, वह दूर हुआ, ईश्वर से
ईश्वर का जो हुआ, उसे फिर प्रकृति नहीं पाएगी

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए – 2×12=24

(क) 'नयी कविता' की कसौटी पर 'नदी के द्वीप' कविता की समीक्षा कीजिए।

(ख) 'ब्रह्म-राक्षस' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'उर्वशी' के पठित अंश के आधार पर कामाध्यात्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'चुका भी हूं मैं नहीं' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।